the hon. Members that keeping in view all the situations and the interaction I have had with the hon. Speaker, the Central Hall, where we had Joint Session this morning, will be known henceforth as *'Samvidhan Sadan'*. I had adjourned the House to confer with leaders of the political parties, and I am happy that there was broad consensus on this. We will work out a situation whereby we can make it extremely impactful.

माननीय सदस्यो, अब मैं माननीय प्रधान मंत्री, नरेन्द्र मोदी जी को सदन को सम्बोधित करने के लिए आमंत्रित करता हूँ।

REGARDING INAUGURAL SESSION OF RAJYA SABHA IN THE NEW PARLIAMENT BUILDING

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी): आदरणीय सभापति जी, हम सबके लिए आज का यह दिवस यादगार भी है और ऐतिहासिक भी है। इससे पहले मुझे लोक सभा में भी अपनी भावना को व्यक्त करने का अवसर मिला था। अब राज्य सभा में भी आज आपने मुझे अवसर दिया है, मैं आपका आभारी हूँ।

आदरणीय सभापति जी, हमारे संविधान में राज्य सभा की परिकल्पना 'उच्च सदन' के रूप में की गई है। संविधान निर्माताओं का यह आशय रहा है कि यह सदन राजनीति की आपा-धापी से ऊपर उठ करके गंभीर बौद्धिक विचार-विमर्श का केन्द्र बने और देश को दिशा देने का सामर्थ्य यहीं से निकले। यह देश की स्वाभाविक अपेक्षा भी है और लोकतंत्र की समृद्धि में यह योगदान ही अधिक मूल्य वृद्धि कर सकता है।

आदरणीय सभापति जी, इस सदन में अनेक महापुरुष रहे हैं। मैं सबका उल्लेख तो न कर पाऊँ, लेकिन लालबहादुर शास्त्री जी हों, गोविन्द बल्लभ पंत साहब हों, लाल कृष्ण आडवाणी जी हों, प्रणब मुखर्जी साहब हों, अरुण जेटली जी हों - ऐसे अनगिनत विद्वान, श्रेष्ठीजन और सार्वजनिक जीवन में वर्षों तक तपस्या किए हुए लोगों ने इस सदन को सुशोभित किया है, देश का मार्गदर्शन किया है। ऐसे कितने ही सदस्य हैं, जो एक प्रकार से स्वयं में एक संस्था रहे हैं, एक इंडिपेंडेंट थिंक टैंक के रूप में अपना सामर्थ्य, देश को उसका लाभ देने वाले भी रहे हैं। संसदीय इतिहास के शुरुआती दिनों में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने राज्य सभा के महत्व पर कहा था, "Parliament is not only a legislative, but a deliberative body." राज्य सभा से देश की जनता की अनेक ऊँची अपेक्षाएँ हैं, सर्वोत्तम अपेक्षाएँ हैं। इसलिए माननीय सदस्यों के बीच गंभीर विषयों की चर्चा करना और उन्हें सुनना - यह भी एक बहुत सुखद अवसर होता है।

नया संसद भवन सिर्फ नई बिल्डिंग ही नहीं है, बल्कि यह एक नई शुरुआत का प्रतीक भी है। हम व्यक्तिगत जीवन में भी देखते हैं कि जब किसी भी नई चीज़ के साथ हमारा जुड़ाव होता है, तब पहले मन करता है कि अब मैं एक नए वातावरण का optimum utilization करूँगा, मैं उसके सर्वाधिक सकारात्मक वातावरण में काम करूँगा। यह एक सहज स्वभाव होता है। अमृत काल की शुरुआत में ही इस भवन का निर्माण होना और इस भवन में हम सबका प्रवेश होना - यह अपने

आप में हमारे देश के 140 करोड़ नागरिकों की जो आशा-आकांक्षाएं हैं, उनमें एक नई ऊर्जा भरने वाला बनेगा, नई आशा और नया विश्वास पैदा करने वाला बनेगा।

आदरणीय सभापति जी, हमें तय समय-सीमा में लक्ष्यों को हासिल करना है, क्योंकि देश, जैसा कि मैंने पहले भी कहा था, ज्यादा प्रतीक्षा नहीं कर सकता है। एक कालखंड था, जब सामान्य जन को लगता था कि ठीक है, हमारे माँ-बाप ने भी ऐसे ही गुजारा किया है, हम भी कर लेंगे, हमारे नसीब में यही था, हम जी लेंगे, आज के समाज के जीवन की और खास करके, नई पीढ़ी की सोच यह नहीं है, इसलिए हमें भी नई सोच के साथ, नई शैली के साथ सामान्य मानवी की आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए हमारे कार्य का व्याप बढ़ाना पड़ेगा, हमारी सोचने की जो सीमाएं हैं, उनसे आगे बढ़ना पड़ेगा। जितनी हमारी क्षमता बढ़ेगी, देश की क्षमता बढ़ाने में हमारा योगदान भी उतना ही बढ़ेगा।

आदरणीय सभापति जी, मैं मानता हूँ कि इस नए भवन में, इस उच्च सदन में हम अपने आचरण से, अपने व्यवहार से संसदीय शुचिता के एक प्रतीक के रूप में देश की विधान सभाओं को, देश के स्थानीय स्वराज की संस्थाओं को, वहाँ की सारी व्यवस्थाओं को प्रेरणा दे सकते हैं। मैं समझता हूँ कि यह स्थान ऐसा है, जिसमें यह सामर्थ्य सबसे अधिक है और इसका लाभ देश को मिलना चाहिए, देश के जन-प्रतिनिधियों को मिलना चाहिए - चाहे वह ग्राम प्रधान के रूप में चुना गया हो, चाहे वो संसद में आया हो। यह परंपरा हम यहाँ से कैसे आगे बढ़ाएं? आदरणीय सभापति जी, पिछले नौ वर्ष से आप सबके साथ और सहयोग से हमें देश की सेवा करने का मौका मिला, कई बड़े निर्णय करने के अवसर आए और बड़े महत्वपूर्ण निर्णयों पर फैसले भी हुए। कई फैसले तो ऐसे थे, जो दशकों से लटके हुए थे, उन फैसलों की, ऐसी बातें थीं, जिन्हें बहुत कठिन माना जाता था, मुश्किल माना जाता था - राजनीतिक दृष्टि से तो उन्हें स्पर्श करना भी बहुत ही गलत माना जाता था, लेकिन इन सबके बावजूद भी हमने उस दिशा में कुछ हिम्मत दिखाई। राज्य सभा में हमारे पास इतनी संख्या नहीं थी, लेकिन हमें एक विश्वास था कि राज्य सभा दलगत सोच से ऊपर उठकर देशहित में जरूर अपने फैसले लेगी। मैं आज बड़े संतोष के साथ कह सकता हूँ कि यह उदार सोच का परिणाम है कि हमारे पास संख्या बल कम होने के बावजूद भी आप सभी माननीय सांसदों की मेच्योरिटी के कारण, समझ के कारण, राष्ट्रहित के प्रति अपनी जिम्मेवारी के कारण आप सबके सहयोग से हम कई ऐसे कठिन निर्णय भी ले पाए।

और राज्य सभा की गरिमा को ऊपर उठाने का काम सदस्य संख्या के बल पर नहीं, समझदारी के सामर्थ्य पर आगे बढ़ा, इससे बड़ा संतोष क्या हो सकता है? और इसलिए मैं सदन के सभी माननीय सांसदों, जो आज हैं और जो इसके पहले थे, उन सबका धन्यवाद करता हूँ।

आदरणीय सभापति जी, लोकतंत्र में कौन शासन में आएगा, कौन नहीं आएगा, कौन कब आएगा, यह क्रम चलता रहता है और यह बहुत स्वाभाविक भी है। लोकतंत्र की यह स्वाभाविक प्रकृति और प्रवृत्ति भी है। लेकिन जब भी विषय देश के लिए सामने आए, हम सबने मिलकर राजनीति से ऊपर उठकर देश के हितों को सर्वोपरि रखते हुए कार्य करने का प्रयास किया है।

आदरणीय सभापति जी, राज्य सभा एक प्रकार से राज्यों का भी प्रतिनिधित्व करती है। यह एक प्रकार से कोऑपरेटिव फेडरलिज्म और अब जब कॉम्पिटिटिव कोऑपरेटिव फेडरलिज्म पर बल दे रहे हैं, तब हम देख रहे हैं कि अनेक ऐसे मसले रहे हैं, जिन पर अत्यंत सहयोग के साथ देश आगे बढ़ा है। कोविड का संकट बहुत बड़ा था। दुनिया ने भी परेशानी झेली, हम लोगों ने भी

झेली है, लेकिन हमारे फेडरलिज्म की ताकत थी कि केन्द्र और राज्यों ने मिलकर, जिससे जो बन पड़ा, वह करके देश को बहुत बड़े संकट से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया और यही हमारे कोऑपरेटिव फेडरलिज्म की ताकत को बल देता है। हमारे फेडरल स्ट्रक्चर की एक ताकत यह है कि उसने अनेक संकटों का सामना किया है और हमने सिर्फ संकटों के समय में ही नहीं, बल्कि उत्सव के समय में भी दुनिया के सामने भारत की उस ताकत को पेश किया है, जिससे दुनिया प्रभावित हुई है। भारत की विविधता, भारत के इतने राजनीतिक दल, भारत में इतने मीडिया हाउसेज़, भारत के इतने रहन-सहन, भारत की बोलियां, ये सारी चीजें जी20 के जो समिट्स राज्यों में हुए, उनमें दिखीं। दिल्ली में तो यह बहुत देर से आई, लेकिन उसके पहले देश के 60 शहरों में 220 से ज्यादा समिट्स हुए, जिनमें हर राज्य ने बढ़-चढ़कर बड़े उत्साह के साथ, इस भाव के साथ मेहमाननवाज़ी की कि वे विश्व को प्रभावित करें। इस प्रकार से उन्होंने मेहमाननवाज़ी भी की और जो deliberations हुए, उन्होंने तो दुनिया को दिशा देने का सामर्थ्य दिखाया है और यह हमारे federalism की ताकत है। उसी कोऑपरेटिव फेडरलिज्म के कारण आज हम यहाँ प्रगति कर रहे हैं।

आदरणीय सभापति जी, हमारी यह नई संसद, इस नई पार्लियामेंट बिल्डिंग में भी उस फेडरलिज्म का एक अंश जरूर नज़र आता है, क्योंकि जब यह बिल्डिंग बन रही थी, तब राज्यों से प्रार्थना की गई थी कि कई बातें ऐसी हैं, जिनके संबंध में राज्यों की कोई न कोई याद हमें यहाँ चाहिए, यह लगना चाहिए कि यहाँ भारत के सभी राज्यों का प्रतिनिधित्व है। यहाँ कई प्रकार की ऐसी कलाकृतियाँ, कई चित्र हमारी इस बिल्डिंग की दीवारों की शोभा बढ़ा रहे हैं, जिन्हें राज्यों ने पसंद किया और अपने राज्य की सर्वश्रेष्ठ चीज़ यहाँ भेजी। यानी, एक प्रकार से यहाँ के वातावरण में राज्य भी हैं, राज्यों की विविधता भी है और फेडरलिज्म की सुगंध भी है।

आदरणीय सभापति जी, टेक्नोलॉजी ने जीवन को बहुत तेज़ी से प्रभावित किया है। पहले टेक्नोलॉजी में बदलाव आने में 50-50 साल लग जाते थे, वे आजकल कुछ हफ्तों में आ जाते हैं। आधुनिकता अनिवार्यता बन गई है और आधुनिकता को मैच करने के लिए हमें अपने आपको भी निरंतर डायनमिक रूप से आगे बढ़ाना ही पड़ेगा, तब जाकर उस आधुनिकता के साथ हम कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ सकते हैं।

आदरणीय सभापति जी, पुराने भवन में, जिसको अभी आपने संविधान सदन के रूप में कहा, हमने वहां कभी आज़ादी का अमृत महोत्सव बड़ी आन, बान और शान के साथ मनाया। हमने 75 साल की हमारी यात्रा की तरफ देखा भी और नई दिशा, नए संकल्प करने का प्रयास भी शुरू किया है, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि नए संसद भवन में जब हम आज़ादी की शताब्दी मनाएंगे, तो वह स्वर्ण शताब्दी विकसित भारत की होगी, डेवलप्ड इंडिया की होगी। ये मेरा पूरा विश्वास है।

महोदय, पुराने भवन में हम 5वीं अर्थव्यवस्था तक पहुंचे थे। मुझे विश्वास है कि नए संसद भवन में हम दुनिया की टॉप 3 इकोनॉमी में स्थान प्राप्त करेंगे। पुराने संसद भवन में गरीब कल्याण के अनेक इनिशिएटिव लिए गए, अनेक काम हुए, नए संसद भवन में हम अब शत-प्रतिशत सैचुरेशन, जिसका हक है, उसको पूरा मिले, इस पर काम करेंगे।

आदरणीय सभापति जी, इस नए सदन की दीवारों के साथ-साथ, हमें भी अब टेक्नोलॉजी के साथ अपने आपको एडजस्ट करना पड़ेगा, क्योंकि अब सारी चीज़ें हमारे सामने आई-पैड पर हैं। मैं तो प्रार्थना करूंगा कि कल कुछ समय निकाल कर बहुत से माननीय सदस्यों को अगर

टेक्नोलॉजी से परिचित करा दिया जाए, तो उनको सुविधा रहेगी। वे बैठेंगे, अपनी स्क्रीन देखेंगे, यह स्क्रीन भी देखेंगे और टेक्नोलॉजी के एक्सपर्ट्स उनकी मदद के लिए रहेंगे, तो हो सकता है कि उनको कठिनाई न आए, क्योंकि आज मैं अभी लोक सभा में था, तो कई साथियों को इन चीज़ों को ऑपरेट करने में दिक्कत हो रही थी। यह हम सबका दायित्व है कि हम इसमें सबकी मदद करें। कल कुछ समय निकाल कर अगर यह हो सकता है तो अच्छा होगा।

आदरणीय सभापति जी, यह डिजिटल का युग है। हमें इस सदन से भी उन चीज़ों को आदतन हमारा हिस्सा बनाना ही होगा। शुरू में थोड़ा समय लगता है, लेकिन अब तो बहुत सी चीज़ें user friendly होती हैं और बड़े आराम से उन चीज़ों को adopt किया जा सकता है, इसलिए हम इसको करें।

महोदय, 'मेक इन इंडिया' एक प्रकार से ग्लोबली गेंम चेंजर के रूप में है और हमें इसका भरपूर फायदा उठाना है। मैंने कहा कि नई सोच, नए उत्साह, नयी उमंग और नई ऊर्जा के साथ हम आगे बढ़कर ऐसा कर सकते हैं।

आदरणीय सभापति जी, आज नया संसद भवन देश के लिए एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक फैसले का साक्षी बन रहा है। अभी लोक सभा में एक बिल प्रस्तुत किया गया है। वहां चर्चा होने के बाद वह यहां भी आएगा। नारी शक्ति के सशक्तिकरण की दिशा में जो पिछले अनेक वर्षों से महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं, उनमें एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम, आज हम सब मिलकर उठाने जा रहे हैं। सरकार का प्रयास रहा, ईज़ ऑफ लिविंग का, क्वालिटी ऑफ लाइफ का, और जब हम ईज़ ऑफ लिविंग, क्वालिटी ऑफ लाइफ की बात करते हैं, तो उसकी पहली हकदार हमारी बहनें होती हैं, हमारी नारी होती है। क्योंकि उन्हीं को सब चीज़ें झेलनी पड़ती हैं, इसलिए हमारा प्रयास रहा है कि राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका बढ़े - यह भी हमारी जिम्मेवारी है। अनेक नए-नए सेक्टर्स हैं, जिनमें महिलाओं की शक्ति, महिलाओं की भागीदारी निरंतर सुनिश्चित की जा रही है। माइनिंग में बहनें काम कर सकें, उसके संबंध में हमारे सांसदों की मदद से निर्णय हुआ। हमने बेटियों के लिए सैनिक स्कूलों के दरवाजे खोल दिए। बेटियों में जो सामर्थ्य है, उस सामर्थ्य को अब अवसर मिलना चाहिए। उनके लिए ifs and buts का युग खत्म हो चुका है। हम जितनी सुविधा देंगे, उतना सामर्थ्य हमारी मातृशक्ति, हमारी बेटियां, हमारी बहनें दिखाएंगी। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान कोई सरकारी कार्यक्रम नहीं है, समाज ने इसे अपने आप बढ़ाया है, जिसके कारण बेटियों के मान-सम्मान की दिशा में समाज में एक भाव पैदा हुआ है। महिलाओं ने बढ़-चढ़कर मुद्रा योजना हो, जन-धन योजना हो, का लाभ उठाया है। आज भारत में financial inclusion के अंदर महिलाओं का सक्रिय योगदान नज़र आ रहा है। मैं समझता हूं कि यह अपने आप में उनके परिवार के जीवन में भी उनके सामर्थ्य को प्रकट करता है, जिस सामर्थ्य का अब राष्ट्र जीवन में भी प्रकट होने का वक्त आ चुका है। हमारी कोशिश रही है कि हमारी माताओं-बहनों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए 'उज्ज्वला योजना' शुरू की गई है। हमें मालूम है कि पहले गैस सिलेंडर के लिए एमपी के घर के चक्कर काटने पड़ते थे। मैं जानता हूं कि गरीब परिवारों तक उसको पहुंचाना बहुत बड़ा आर्थिक बोझ है, लेकिन हमने महिलाओं के जीवन को ध्यान में रखते हुए उस काम को किया। महिलाओं के सम्मान के लिए ट्रिपल तलाक लंबे अरसे से राजनीतिक दृष्टि से, राजनीतिक लाभ का शिकार हो चुका था। यह बड़ा मानवीय निर्णय था, लेकिन हम सभी माननीय सांसदों की मदद से उसको कर पाए। नारी सुरक्षा के लिए कड़े कानून

बनाने का काम भी हम सब कर पाए हैं। Women-led development, G20 की सबसे बड़ी चर्चा का विषय रहा। दुनिया के कई देश हैं, जिनके लिए women-led development विषय थोड़ा-सा नया अनुभव होता था। जब उनकी चर्चा में सुर आते थे, तो कुछ अलग से सुर सुनने को मिलते थे, लेकिन G20 के डेक्लेरेशन में सबने मिलकर women-led development को सपोर्ट किया और अब यह विषय भारत से दुनिया की तरफ पहुंचा है, यह हम सबके लिए गर्व की बात है।

आदरणीय सभापति जी, इसी बैकग्राउंड में लंबे अरसे से विधान सभा और लोक सभा में सीधे चुनाव में बहनों की भागीदारी सुनिश्चित करने का विषय है। इस पर बहुत समय से आरक्षण की चर्चा चली थी। हर किसी ने कुछ न कुछ प्रयास किया है और 1996 से इसकी शुरुआत हुई है। अटल जी के समय में कई बार बिल लाए गए, लेकिन नंबर कम पड़ते थे, कुछ उग्र विरोध का भी वातावरण रहता था, तो एक महत्वपूर्ण काम करने में काफी असुविधा होती थी। अब जब हम नए सदन में आए हैं, नया होने की एक उमंग भी होती है, तो मुझे विश्वास है कि यह जो लंबे अरसे से चर्चा का विषय रहा है, अब इसको हमने कानून बनाकर हमारे देश की विकास यात्रा में नारी शक्ति की भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास किया है। इसलिए नारी शक्ति वंदन अधिनियम को संविधान संशोधन के रूप में सरकार का लाने का विचार है, जिसको आज लोक सभा में रखा गया है। कल लोक सभा में इस पर चर्चा होगी और इसके बाद वह राज्य सभा में भी आएगा। मैं आज आप सबसे प्रार्थना करता हूं कि यह एक ऐसा विषय है, जिसको अगर हम सर्वसम्मति से आगे बढ़ाएंगे, तो सच्चे अर्थ में उसकी शक्ति अनेक गुणा बढ़ जाएगी।

जब भी यह बिल हम सबके सामने आए, मैं राज्य सभा के अपने सभी माननीय साथियों से आज यह आग्रह करने आया हूं कि आने वाले एक दो दिन में जब उस पर सर्वसम्मति से निर्णय करने का अवसर आए, तो उसमें आप सब सहयोग करें, ऐसी अपेक्षा के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापतिः माननीय सदस्यों, अब मैं माननीय विपक्ष के नेता, श्री मल्लिकार्जुन खरगे जी को सदन को सम्बोधित करने के लिए आमंत्रित करता हूं।

विपक्ष के नेता (श्री मल्लिकार्जुन खरगे): माननीय सभापति महोदय, मैं बहुत लंबा भाषण नहीं करना चाहता हूं। मैं यह सोचकर आया था कि आज आपकी तरफ से कुछ भाषण होगा और उसके बाद आप हम सब लोगों को रिहा करेंगे। मेरी ऐसी सोच थी और वह गलत हो गई। एक बात तो है कि भारत के पहले प्रधान मंत्री जी के आज दो-तीन बहुत लंबे भाषण हो गए। एक तो पार्लियामेंट में हो गया, एक ज्वाइंट रूप में सेन्ट्रल हॉल में और फिर यहां पर हुआ। उन्होंने जो कुछ कहा - वे हमें क्रेडिट नहीं देते हैं - लेकिन मैं एक बात उनके नोटिस में लाना चाहता हूं कि The Women's Reservation Bill was already passed in 2010, लेकिन इसमें बाधा आने के कारण यह वहीं रुक गया। पहले इसमें बैकवर्ड क्लासेज़ को रिज़र्वेशन देने की बात थी, शैड्यूल्ड कास्ट्स का तो ईज़ी था, क्योंकि उनके लिए ऑलरेडी कांस्टिट्यूशनल रिज़र्वेशन होने की वजह से उसमें 1/3rd ईज़िली आता था, लेकिन इसमें बैकवर्ड क्लासेज़ के लिए थोड़ा आगे-पीछे हो सकता है। यदि बैकवर्ड क्लासेज़ को 1/3rd रिज़र्वेशन देने का constitutional amendment नहीं होता, तो नैचुरली वहां की महिलाओं को वह नहीं मिलेगा। अगर आप नहीं करेंगे, तो उन बैकवर्ड क्लासेज़ के साथ

अन्याय होगा। उनके साथ क्यों अन्याय होगा - क्योंकि लोग चुन-चुनकर हमेशा लेडीज़ के लिए ऐसा करते हैं - बैकवर्ड क्लास, शैड्यूल्ड क्लास की लेडीज़ उतनी पढ़ी-लिखी नहीं हैं, उनकी लिटरेसी, साक्षरता भी कम है। यह कम होने की वजह से और सभी पोलिटिकल पार्टियों का - मैं एक पार्टी की बात नहीं कह रहा हूं - सभी पोलिटिकल पार्टियों की एक आदत है कि महिला की बात करो, तो कमजोर महिला को देते हैं। जो सक्षम है, जो लड़ सकती है, उसको ...(**व्यवधान**)... आप सुनिए ...(**व्यवधान**)...

आप वन-थर्ड टिकट देते हो ... (**व्यवधान**)... आप चुप बैठ जाइए। ... (**व्यवधान**)... यहां वन-थर्ड की बात चल रही है। ... (**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः प्लीज़।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः यहां वन-थर्ड की बात चल रही है। ... (**व्यवधान**)...मुझे मालूम है कि शैड्यूल्ड कास्ट के लोगों को, बैकवर्ड के लोगों को किस ढंग से पार्टियां चुनती हैं, मैंने तो वह बोला है। ... (**व्यवधान**)...

शिक्षा मंत्री; तथा कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्री (श्री धर्मेंद्र प्रधान): सर, ... (**व्यवधान**)...

SHRI PRAMOD TIWARI (Rajasthan): Sir, I have a point of order. *...(Interruptions)..*

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, Shri Pramod Tiwari has a point of order. *...(Interruptions)..* Please sit down. *...(Interruptions)..* Mr. Tiwari has a point of order. Mr. Tiwari, under which rule?

श्री प्रमोद तिवारी: सर, अगर सदन के सामने कोई चीज़ हो, तो... (**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Mr. Tiwari, under which rule?

श्री प्रमोद तिवारीः सर, अगर सदन के सामने कोई चीज़ हो, ... (**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: One minute.

श्री प्रमोद तिवारीः सर, जब लीडर ऑफ अपोजिशन बोलने के लिए खड़े हों, तो ... (**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Please help me. You are raising a point of order. *...(Interruptions)..*

श्री प्रमोद तिवारीः सर, अगर सदन के सामने कोई चीज़ हो, तो... (**व्यवधान**)... सर, जब लीडर ऑफ अपोजिशन बोलने के लिए खड़े हैं, तो सदन में यह क्या हो रहा है?... (**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Okay. We will continue. ...*(Interruptions)*..

श्री प्रमोद तिवारीः सर, जब लीडर ऑफ अपोजिशन बोलने के लिए खड़े हैं, तो सदन में यह क्या हो रहा है?... (**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Leader of the Opposition. ...*(Interruptions)*.. Mr. Kharge. ...*(Interruptions)*.. Hon. Leader of the Opposition. ...*(Interruptions)*.. Please. ...*(Interruptions)*..

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, मेरी समझ में नहीं आता है कि वे क्या समझे? क्या समझ कर वे मेरा विरोध कर रहे हैं? मेरा कहना यह है कि वे हमेशा कमजोर वर्गों के ऐसे लोगों को टिकट देते हैं, जो मुंह नहीं खोलते हैं। ... (**व्यवधान**)... वे पार्टी में बात भी नहीं करते हैं। मैं इसीलिए बोल रहा हूं। ... (**व्यवधान**)...मैंने सब पार्टी शब्द बोला है। मैंने आपकी पार्टी को नहीं बोला है। ... (**व्यवधान**)...आप बैठ जाइए। ... (**व्यवधान**)... ऐसा है, हिन्दुस्तान की हर पार्टी में ऐसा है, इसीलिए महिलाएँ पीछे हैं। ... (**व्यवधान**)... आप उनको बात नहीं करने देते हैं। ... (**व्यवधान**)... उनके हकों को आप कभी आगे नहीं बढ़ने देते हैं।... (**व्यवधान**)...

THE MINISTER OF FINANCE; AND THE MINISTER OF CORPORATE AFFAIRS (SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN): Sir,..*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please, hon. Members, one minute. ..*(Interruptions)*... I will come to you. .....*(Interruptions)*... Hon. Finance Minister.

श्री धर्मेंद्र प्रधानः किसी को बोलने नहीं देंगे। ... (**व्यवधान**)...

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: Sir, I am sorry,.. ...*(Interruptions)*... Sir, we respect the Leader of the Opposition. But, to make a sweeping statement that all parties choose women who are not effective is absolutely unacceptable. ...*(Interruptions)*.. I speak on behalf of all our women. ...*(Interruptions)*.. We have all been empowered by our party, by our Prime Minister. Rashtrapati Draupadi Murmuji is an empowered woman. Every MP of my party is an empowered woman. Making a sweeping statement, — it might represent their party — it is unacceptable. Although they have had women Presidents for their party, in spite of that, they cannot have

women who are empowered. But I object to him making a sweeping generalization of all parties. ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: The Leader of the Opposition. ...*(Interruptions)*.. Please.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, पिछड़ी हुई महिलाओं को, शैड्यूल्ड कास्ट महिलाओं को ऐसा मौका नहीं मिलता, जैसा इनको मिल रहा है। यह हम बोल रहे हैं। ... (**व्यवधान**)... तो इसीलिए ... (**व्यवधान**)...

श्रीमती निर्मला सीतारमण: राष्ट्रपति जी कौन हैं? ... (**व्यवधान**)... Who is the Rashtrapati? ...*(Interruptions)*..

MR. CHAIRMAN: One minute. ..*(Interruptions)*..

श्रीमती निर्मला सीतारमण: राष्ट्रपति जी कौन हैं? ... (**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Let her respond. ...*(Interruptions)*... Please. ..*(Interruptions)*.. The hon. Finance Minister. ...*(Interruptions)*...

श्रीमती निर्मला सीतारमण: राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी कौन हैं? I am sorry; the Leader of the Opposition cannot insult people like this; he cannot draw a differentiation between women. ...*(Interruptions)*... महिलाओं में भेद; no way. ...*(Interruptions)*... How can he draw a difference between one woman and other woman? ...*(Interruptions)*... We are asking for reservation for all women. ...*(Interruptions)*... Rashtrapatiji is a tribal woman. ...*(Interruptions)*... This is unacceptable. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Please take your seats. ...*(Interruptions)*... One minute; take your seats. ...*(Interruptions)*... Hon. Members, what is being discussed is historic, epochal, justice to half of humanity, something which the people awaited for decades. Several efforts had been made, as the hon. Prime Minister indicated. Hon. Kharge was saying something to which an exception has been taken. ...*(Interruptions)*... Hon. Members, the minimum I expect is unanimity, affirmative step and total support to this historic step which is being taken belatedly. ...*(Interruptions)*... Mr. Tiwari, women of this country, from all categories, are waiting for it. They look up to us. We are the Upper House. We are the House of Elders. ...*(Interruptions)*... If we don't come to support such an affirmative legislation... ...*(Interruptions)*... So, I give the floor to the Leader of the Opposition.

....(Interruptions)... No one else... *...(Interruptions)...* Nothing else will go on record. The Leader of the Opposition, please go ahead.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Thank you, Sir. मेरा यही कहना है कि मैं इस बिल का स्वागत करता हूं।

MR. CHAIRMAN: One minute, Khargeji. मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूं कि यह मुद्दा अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस पर पूरी दुनिया की नज़र है, फिफ्टी परसेंट ह्यूमैनिटी के साथ न्याय हो रहा है। कई प्रयास हुए, लंबे समय से प्रयास हुए and now we have to fructify that. Yes, the Leader of the Opposition.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सभापति जी, मैं वही बात बोल रहा हूं कि इसके समर्थन में हमने भी पहले काम किया है। हमने 2010 में इसे तैयार करने की पूरी कोशिश की। ..(**व्यवधान**)..आप सुनिए। ..(**व्यवधान**)..ऐसा हुआ, तो हम भी वही आवाज़ उठाएंगे और आपकी आवाज़ को बंद कर देंगे। Sir, the Parliament of India, the temple of Indian democratic polity, is sacred and permanent. However, as we meet for the first time in the Rajya Sabha Chamber in the New Parliament Building, this occasion marks a new beginning as far as the venue of our deliberations is concerned. It is my fond hope that we have fruitful discussion on all matters of public interest and have considered deliberations on Bills. I also hope that in the times to come, the fraternity among parliamentarians, cutting across party lines, is re-established in order to create a congenial atmosphere and constructive exchange of ideas among law-makers. The need of the nation is that we parliamentarians live up to people's expectations in addressing their concerns. सर, मैं यही कोशिश कर रहा था कि हम जो कानून बनाते हैं, उन कानूनों का लाभ गरीब से गरीब व्यक्ति को मिले, महिलाओं को मिले। मैं उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए बोल रहा था, लेकिन किसी ने बीच में बोलकर इस वातावरण को खराब कर दिया। ठीक है, एक और मुद्दा, जिसके बारे में माननीय प्रधान मंत्री जी ने कहा कि हमारी भारतीय डेमोक्रेसी फेडरल स्ट्रक्चर है और हमने फेडरल स्ट्रक्चर को बहुत मजबूती दी है - वह कहा है, लेकिन सभी का यह कहना है - आप किसी से भी पूछ लीजिए कि आपके नेतृत्व में फेडरल स्ट्रक्चर दिन पर दिन कमज़ोर होता जा रहा है। ..(**व्यवधान**)..

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS; THE MINISTER OF COAL; AND THE MINISTER OF MINES (SHRI PRALHAD JOSHI): Sir, I wish to say something. *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, I appeal to all of you. This is a historic day and we must work with congeniality, cooperation and consensual approach.

...(Interruptions)... Now, the hon. Minister of Parliamentary Affairs, Shri Pralhad Joshi.

SHRI PRALHAD JOSHI: Sir, my only request with folded hands is that when the hon. Prime Minister spoke in both the Houses and today morning in the Central Hall, he spoke totally apolitical. *...(Interruptions)...* He entirely narrated today's situation, and he never alleged against anything. It was very unbiased and balanced speech. At least, on the first day... *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: Nothing else will go on record. *...(Interruptions)...*

SHRI PRALHAD JOSHI: Sir, can we expect from the Leader of the Opposition, who is an experienced person, who is an experienced leader and who has been an eight-time MLA, to at least speak like a statesman? That is what we expect from him. *...(Interruptions)...*

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, आपको ...(**व्यवधान**)... आप चुप बैठिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: खरगे जी, प्रहलाद जोशी जी तो आपके प्रांत के हैं, उनकी बात को मानिए। His expectation is that you act like a statesman. इसमें तो कोई गड़बड़ नहीं है।

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: मैंने देखा है कि यहाँ पर वे दिल्ली में क्या करते हैं और वहाँ कर्णाटक की गली में आकर क्या करते हैं, मुझे मालूम है। मुझे वह सब मालूम है। मेरी ज़ुबान से यह बात नहीं आई। मेरी ज़ुबान से यह बात नहीं आई, प्राइम मिनिस्टर ने खुद अपने भाषण में कहा था।

श्री सभापति: खरगे जी, नहीं, आज दो विचित्र बातें हुईं। आपने ...(**व्यवधान**)... एक सेकंड, जयराम जी, प्लीज़। आपने कहा इस सदन में और मैंने आपको कहा। आपने कहा, प्रधान मंत्री, नरेन्द्र मोदी जी ने बहुत कम वक्तव्य दिए हैं। यह आपने कहा और आपने कहा कि प्रेज़िडेंट्स एड्रेस पर या अदरवाइज़ फॉर्मल वक्तव्य दिए हैं। अब आज ज्यादा दे दिए, तो भी आपको आपत्ति हो गई। ...(**व्यवधान**)... Mr. Jairam, he does not need your support. He is the Leader of the Opposition. *...(Interruptions)...* Don't downsize the Leader of the Opposition. ...(Interruptions)... Please go ahead, Kharge ji. No one else will speak. *...(Interruptions)...*

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, यह मेरी ज़ुबान से नहीं आया। मैंने लिख लिया है। जब प्रधान मंत्री जी बोल रहे थे, तो वे किस-किस प्वाइंट पर बोल रहे थे, उसे मैं इस कागज पर लिख कर बोल रहा हूँ। उन्होंने फेडरल स्ट्रक्चर के बारे में या फेडरलिज्म के बारे में बात नहीं की, अगर वे ऐसा कहें, तो मैं

विद्ड्रॉ कर लेता हूँ। ...(**व्यवधान**)... इसीलिए मैं यह कह रहा हूँ, आपने मजबूत करने की बात की, लेकिन एक-एक गवर्नमेंट को ऐसे गिरा दिया। हर गवर्नमेंट को, महाराष्ट्र गवर्नमेंट को गिरा दिया, कर्णाटक गवर्नमेंट को गिरा दिया, मध्य प्रदेश गवर्नमेंट को गिरा दिया, मणिपुर गवर्नमेंट को गिरा दिया, ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Yes, Mr. Dharmendra Pradhan. *...(Interruptions)...* Nothing else will go record.

श्री धर्मेंद्र प्रधान: आदरणीय खरगे साहब ने माननीय प्रधान मंत्री जी के बारे में कहा। हमारे पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर ने बड़ी उदारता के साथ कहा कि आज जिस प्रकार से हम शुरुआत कर रहे हैं, उन्हें एक स्टेट्समैनशिप दिखानी चाहिए। प्रधान मंत्री जी ने कंपीटिटिव को-ऑपरेटिव फेडरलिज्म के बारे में कहा। सर, मैं एक उदाहरण देना चाहता हूँ। 2014 में मई महीने में माननीय प्रधान मंत्री जी ने शपथ ली, तब 14वें फाइनेंस कमीशन का निर्णय उनके सामने आया। 14वाँ फाइनेंस कमीशन पिछली सरकारों में बना था। सर, 10 परसेंट का क्वांटम जंप दिया गया। उन्होंने यह नहीं देखा कि किस राज्य ने उनको वोट दिया है और किस राज्य ने उनको वोट नहीं दिया है। उन्होंने नहीं देखा। सर, ये हमें क्या कहते हैं? वर्षों तक इन्होंने पीढ़ी-दर-पीढ़ी दिल्ली में शासन किया, ये कैसे राज्यों पर शासन कर रहे थे, मैं सिर्फ असम का उदाहरण देना चाहूँगा। सर, ये कैसे शासन कर रहे थे, ...(**व्यवधान**)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, यह क्या है? ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Kharge ji, please speak. *...(Interruptions)...* Only the Leader of the Opposition will speak. ...(Interruptions)... Other Members may please take their seats.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं, जब मैं बात करता हूं, अगर वह गलत हो, तो बाद में उठ कर वे अपनी बात रख सकते हैं। यहां पर कॉम्पिटिशन चलता है। कॉम्पिटिशन इस बात का चलता है...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः आप फिर से मुद्दे पर आइए।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः नहीं, जब प्राइम मिनिस्टर सदन में आते हैं, तो यह कॉम्पिटिशन बढ़ता है। मैं सपोर्ट करूं, तुम सपोर्ट करो...(**व्यवधान**)... ज़रा होशियार रहिए, साहब। कौन आपके पीछे से सपोर्ट करता है और कौन आपके सामने बातें करता है, आप इसका थोड़ा ख्याल कर लीजिए।...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः खरगे जी, ऐसा है, आप विषय पर रहिए, वरना बात दूर तलक जाएगी। इतनी दूर तलक जाएगी कि वापस नहीं आएगी।...(**व्यवधान**)... कौन नेता आता है, कितना प्रभावित करता है, सदस्यगण कितना बोलते हैं, ये बातें सबको पता हैं। So, please speak on the subject.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, बहुत-सी स्टेट्स को कमजोर किया जा रहा है। एक तो उनको जल्दी जीएसटी नहीं मिलता है, दूसरा, मनरेगा एकाउंट टाइमली नहीं जाता है। उनकी जो समस्याएं हैं, चाहे एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट हो, इरिगेशन डिपार्टमेंट या कोई दूसरा डिपार्टमेंट हो, उनको जो टाइमली ग्रांट मिलनी चाहिए, वह नहीं मिलती है। अगर ग्रांट टाइमली नहीं मिली, तो जो फेडरल स्टेट्स हैं, यह उनको कमजोर करने जैसा है या मज़बूत करने जैसा है, आप बताइए?...(**व्यवधान**)...

साहब, दूसरी चीज़ मैं बोल रहा हूं कि आप डेमोक्रेसी में विश्वास रखते हैं, लोकतंत्र के अनुसार चलना चाहते हैं। आप लोकतंत्र की बात कहते हैं कि हमने यह किया, हमने इसको मज़बूत किया - आप ये सब बातें कहते हैं, लेकिन जहां डेमोक्रेटिकली इलेक्टेड एमएलएज़ थे या गवर्नमेंट थी, उनको गिराने का काम आपने किया है।...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः आप विषय से अलग भटक रहे हैं। माननीय प्रतिपक्ष के नेता जी, I expect you to please conform to the issue.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः इसमें गलत क्या है, साहब? ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: One second. ...*(Interruptions)*...

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: No, no. I am not going to yield. ...*(Interruptions)*... I am not going to yield. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: But you listen to me.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: I will not yield.

MR. CHAIRMAN: You will listen to me. ...*(Interruptions)*...

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः नहीं, तो आप ही सदन चला लीजिए।

MR. CHAIRMAN: Since you have made a very serious reflection concerning the hon. Finance Minister's Department, let her respond. Please go ahead.

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: Sir, thank you very much for giving me this opportunity. *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record except what she speaks. *...(Interruptions)...*

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: Sir, factually incorrect statement has been made by the Leader of the Opposition. जीएसटी समय पर नहीं मिलता, यह बात एकदम गलत है। I have even borrowed money and paid the States, actually, one or two months in advance each time. Three times we paid in advance. There is no money pending for any State on GST, no delayed payments on GST. I will give you complete data. I am sorry. *...(Interruptions)...* And, if States don't give *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: Both the hon. Leader of the Opposition and the hon. Finance Minister will put the documents on record substantiating their stand either side. Do it during the course of the day.

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: I will provide the record, Sir. Sir, the States don't give the Utilisation Certificate in time. *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: We cannot allow *...(Interruptions)...* We cannot allow freefall of information. *...(Interruptions)...* The statement has been categorically contradicted. Both of them are senior functionaries. They are called upon to put documentation on the Table of the House during the course of the day. Please go ahead.

श्री प्रमोद तिवारीः सर, प्वॉइंट ऑफ ऑर्डर में पांच बार एलओपी को रोका गया है, यह गलत है। एलओपी की एक मर्यादा होती है, उस मर्यादा को खत्म किया जा रहा है।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सभापति महोदय, अगर आप पूरी सीएजी रिपोर्ट की और स्टेट को जो ग्रांट्स जानी थीं, उनके डॉक्युमेंट्स देने के लिए बोलेंगे, तो मैं आपको उन सबसे कलेक्ट करने के बाद दे दूंगा।

MR. CHAIRMAN: No, no. Hon. Leader of the Opposition, you have categorically stated *...(Interruptions)...* You have categorically stated that as on date, GST payments are pending; therefore, no CAG Report. You put that document on record. *...(Interruptions)...* It is a serious issue, and the hon. Finance Minister would also do the same during the course of the day. *...(Interruptions)...*

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: Sir, but because the hon. Leader of the Opposition stated so authoritatively, he should have the document at his hand. Without that, how did he say? *...(Interruptions)...*

MR. CHAIRMAN: Please conclude, Kharge *ji*. *...(Interruptions)...* This is the first day. Let us set a good example. *...(Interruptions)...*

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, यह obstruction मेरे लिए ही क्यों होता है, समझ में नहीं आता है! ...(**व्यवधान**)... प्राइम मिनिस्टर भी उधर वालों को नहीं बोल रहे हैं कि ज़रा बैठिए। ...(**व्यवधान**)... प्राइम मिनिस्टर भी सुन रहे हैं, मज़ा ले रहे हैं, लेकिन मेरे लिए उधर डिफेंड भी नहीं कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति: जब इतना प्रेमभाव है, तो कन्क्लूड कीजिए, अच्छा रहेगा। ...(**व्यवधान**)...

श्री शक्तिसिंह गोहिल (गुजरात)**:** सर ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: This is not the way to shout. ...(*Interruptions*)... Don't get into this habit. ...(*Interruptions*)... Don't get into this habit. ...(*Interruptions*)... You do it repeatedly. ...(*Interruptions*)... Mr. Nasir, you also do it repeatedly. ...(*Interruptions*).. Don't do it. ...(*Interruptions*).. Kharge *ji*, can you have some control over your people? They are disturbing you when you are speaking. ...(*Interruptions*)..

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Sir, my people are under control, but the Prime Minister is not controlling their people.

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

श्री मल्लिकार्जुन खरगे: सर, मैं यह कह रहा हूँ कि सारे स्टेट्स की हालत यही है। अगर आप स्टेट वालों से पूछेंगे, तो वे यही बोलेंगे - चाहे वह वैस्ट बंगाल हो, आन्ध्र प्रदेश हो, महाराष्ट्र हो या पंजाब हो। किसी से भी पूछिए, कर्णाटक से, मध्य प्रदेश से, राजस्थान से, छत्तीसगढ़ से पूछिए। ...(**व्यवधान**)... सर, आप सुनिए। वे सब अपना-अपना पूछेंगे। महाराष्ट्र बोलेंगे, तो आप हैं, क्या इसलिए बोल रहे हैं? ठीक है। फिर अगर आप डायरेक्टली जाकर ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Can you please conclude? ...(*Interruptions*)..

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः उनके खजाने से बैग में डाल कर उठा कर ले जाएँ, फिर तो बात और है। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Kharge *ji*, no direct talk. ...(*Interruptions*).. I am here.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Sir, I am always looking at you. But my difficulty is that you are looking more at that side than me.

MR. CHAIRMAN: Whenever you look at me, I smile at you.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE: Good. सर, मैं आपका ज्यादा वक्त नहीं लेना चाहता।

MR. CHAIRMAN: Yes. Thank you.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः आपको इस बात को ध्यान में रखना चाहिए और खास कर प्रधान मंत्री जी इस बात को ध्यान में रखेंगे, यह मुझे विश्वास है। यह नयी बिल्डिंग है, इसमें अभी बहुत सी कमियाँ भी हैं, आपके नेतृत्व में वे ठीक हो जाएँगी, लेकिन बढ़िया बिल्डिंग में पहली बार आये हैं, इसलिए मैं बहुत ज्यादा समय लेकर कुछ बोलना नहीं चाहता। शान्ति के साथ सुबह काम हुआ, अभी भी हो रहा है, वह होने दीजिए। इसमें मैं कोऑपरेट करूँगा, लेकिन एक बात बोलूँगा, जो जरूर सुननी चाहिए। यह बात ज़रा छोड़नी चाहिए कि तेरा भी मेरा, मेरा तो है ही मेरा - तो दोनों तेरा-मेरा बोल कर सभी चीज़ें अपनी ही झोली में अगर डालते गये और पीछे जो हुआ, उसको भूल जाते हैं, तो यह अच्छा नहीं है, कम से कम इसको याद रखना चाहिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः न तेरा, न मेरा - हमारा। यही हो रहा है।

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः ठीक है। सर, बी.आर. अम्बेडकर जी ने 25 नवम्बर, 1949 को एक बात कही थी। "Will Indians place the country above their creed or will they place creed above country? I do not know. But this much is certain that if the parties place creed above country, our independence will be put in jeopardy for the second time and probably be lost for ever." अगर हम स्टेट के इंटरेस्ट, कंट्री के इंटरेस्ट को छोड़ कर creed, यानी पार्टी को ऊपर रखेंगे और अगर ऐसा करते गये, तो कोई देश ज्यादा दिन आज़ाद नहीं रह सकता, यह उनका कहना है। "This eventuality we must all resolutely guard against. We must be determined to defend our independence with the last drop of our blood."

This is the saying of Dr. Babasaheb Ambedkar in spite of so many obstructions at that time also. हर आदमी यह चाहता है कि अपने देश की इज्ज़त बढ़े और देश को मजबूत बनाए, लेकिन चंद लोग गुत्था लेते हैं, उन्हीं का contract है। देशभक्ति उनका contract है, बोलना उनका contract है। लेकिन आप यह भी देखिए कि समाज में जो दूसरे लोग रहते हैं, वे भी

देश के लिए लड़ते हैं और आखिरी दम तक, खून के आखिरी कतरे तक देश को बचाने के लिए, लड़ने के लिए तैयार रहते हैं और हम भी उनमें से हैं। There is a great danger of things going wrong. Times are fast changing. People, including our own, are being moved by new ideologies. They are getting tired of Government by the people. They are prepared to have a Government for the people, and they are indifferent to whether it is the Government of the people and by the people. उस वक्त भी ऐसे समय आए, लेकिन ऐसी बातें देश के लिए एक होकर उस वक्त आईं। इसलिए इसको हम एक होकर, देश की अच्छाई के लिए, चाहे वह Women Reservation हो या SC/ST Reservation in Promotion हो या कोई और भी चीज़ हो, हम मिल कर, सबको विश्वास में लेकर वह करेंगे। अगर हर चीज़ के बारे में यह कहा जाए कि इसको मैंने किया है, दूसरे कुछ भी नहीं कर रहे हैं, तो यह ठीक नहीं लगता है। Anyway, मैं एक बात कह कर अपनी बात समाप्त करता हूँ।

सर, मैं अभी जो क्वोट कर रहा हूँ, यह भी Constituent Assembly की डिबेट से ही है। "However good a constitution may be, if those who are implementing it are not good, it will prove to be bad." सर, क्या मैं इसको एक बार और पढ़ूँ?...(**व्यवधान**)... "However good a constitution may be, if those who are implementing it are not good, it will prove to be bad. However bad a constitution may be, if those who are implementing it are good, it will be prove to be good." ...(*Interruptions*)... मैंने तो यह हम सबके लिए कहा है।...(**व्यवधान**)... आप तो उस वक्त existence में नहीं थे, तो फिर इसको आप क्यों ले रहे हैं? ...(**व्यवधान**)... उस वक्त तो वे नहीं थे।...(**व्यवधान**)... Constituent Assembly बनाते वक्त तो वे नहीं थे। सिर्फ दो-चार important leaders को छोड़ कर बाकी किसी का उसमें हिस्सा ही नहीं है। आप इसको छोड़ दीजिए।

सर, मैं आपसे विनती करता हूँ कि हमें जो कहना है, वह हमें कहने दीजिए। वे उसका उत्तर तो देंगे। प्राइम मिनिस्टर इतने मजबूत हैं, वे एक-एक घंटा, दो-दो घंटे, तीन-तीन घंटे बोलेंगे और हर दिन बोलेंगे, लेकिन मणिपुर पर नहीं बोलेंगे।...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Khargeji, please. ...(*Interruptions*)... I expect a level. ...(*Interruptions*)... Please. ...(*Interruptions*)... It is not expected of you. ...(*Interruptions*)... Not expected of you. ...(*Interruptions*)... मैंने इसके लिए इस सदन के अंदर अथक प्रयास किया। मैंने यहाँ तक कहा कि आधी रात तक बहस कराऊँगा, लेकिन आपने मौके को avail नहीं किया। मैंने लगातार आपको अनुरोध किया ...(**व्यवधान**)... नतीजा यह हुआ कि लोक सभा में प्रधान मंत्री जी और गृह मंत्री जी ने वक्तव्य दिया। ऐसा मत कीजिए।...(**व्यवधान**)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, यह ठीक नहीं है।...(**व्यवधान**)... ये मुझे कहेंगे। मेरा हक बनता है।...(**व्यवधान**)... मैं वहीं रिप्लाई कर सकता था।...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः मैंने अपनी आँखों से देखा है। मुझे पीड़ा हुई है, परेशानी हुई है।...(**व्यवधान**)...

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, जब गोयल जी उठे, वहाँ पर बोल रहे थे। अगर कई चीज़ें पहले ही होतीं, तो आज यह नौबत नहीं आती।...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Okay. Please conclude.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः उनका भाषण था, उसी वक्त मैं जवाब देने वाला था। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Thank you, Khargeji.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः लेकिन मैं वह occasion नहीं समझा। यहाँ पर प्रधान मंत्री जी ने अपने भाषण में जो कहा, उसके जवाब में मैंने अपने चार शब्दों को रखा है।

MR. CHAIRMAN: Thank you.

श्री मल्लिकार्जुन खरगेः सर, अगर यह आपको ठीक नहीं लगता, तो बात और है, लेकिन हम सबको मिल कर काम करना है। अगर हम सब मिल कर काम नहीं करेंगे, तो देश का उद्धार होने वाला नहीं है, थैंक यू।

MR. CHAIRMAN: The House stands adjourned to meet at 11 a.m. tomorrow, Wednesday, the 20th September, 2023.

The House then adjourned at fifty minutes past three of the clock till eleven of the clock on Wednesday, the 20th September, 2023.